International Journal of Education and Science Research Review ISSN 2348-6457
Volume-1, Issue-4 August- 2014
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

देहरादून जनपद के रायपुर विकासखण्ड के किशोर बालक व बालिकाओं के समायोजन का एक अध्ययन

देशराज सिंह
शोधार्थी
श्री० जे० जे० टी० विश्वविद्यालय,
झुंझुनू, (राजस्थान)

प्रो० गीतिका मेहरोत्रा
श्री० जे० जे० टी० विश्वविद्यालय
झुंझुनू, (राजस्थान)

प्रस्तावनाः–
किशोरावस्था जीवन की महत्वपूर्ण अवस्था है जिसमें बालक में शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक परिवर्तन तीव्र गति से होते है जिसके फलस्वरूप बालक के व्यवहार में तीव्र परिवर्तन होते है, बालक के इन परिवर्तनों को उचित दिशा की ओर मार्गान्तीकृत करने की आवश्यकता होती है जिसके लिए शिक्षा एक महत्वपूर्ण साधन है। किशोरावस्था का विचार व्यक्ति के जैविक एंव मनोवैज्ञानिक दोनों स्वरूपो में अभिव्यक्त होता है। किशोरावस्था 12 वर्ष की आयु से प्रारम्भ होकर 19 वर्ष तक चलती है। इसलिए इस अवस्था को टीन–एज भी कहा जाता है।
जन्म से लेकर मृत्यू तक व्यक्ति को अनेक प्रकार की भूमिकाओं का निर्वाहन करना होता है आयु बढ़ने के साथ–साथ उसे नयी–नयी भूमिकायें गृहण करनी होती है। अपनी इन भूमिकाओं में कभी वह सफल होता है कभी वह असफल होता है। वाणी के द्वारा ही व्यक्ति समाज के मूल्यों, नियमों और आदर्शो आदि को सीखता है, यह वाणी के द्वारा ही समाज में समायोजन करने में सफल होता है।
व्यवहार की उत्पति पर्यावरण से होती है। पर्यावरण का सम्बन्ध मानव जीवन पद्धति से होता है। विज्ञान और प्रौघोगिकी ने मानव जीवन में अनेक सूक्ष्मतायें प्रस्तुत की है। जिससे अनेक समस्याओं का समाधान तो सम्भव हो गया है परन्तु अत्याधिक स्पर्धा, अव्यवहारिकता, औपचारिकता, विभेदीकरण आदि दुर्गुणों की बहुलता हो गई है। इन परिवर्तनों के परिणाम असामान्य व्यवहार के लक्षण प्रचुर माया में दृष्टिगोचर होने लगे है जिससे असमायोजन उत्पन्न होता है।
व्यक्ति प्रारम्भिक बाल्यावस्था से ही अपनी क्षमताओं की सीमाओं एंव वातावरण के प्रभावों के अन्तर्गत उन व्यवहारिक प्रतिमानों को अपनाता है जो कि उसे कुसमायोजित तथा सुसमायोजित बनाते है। किशोर अपनी व्यक्तिगत व सामूहिक आवशयकताओं की पूर्ति हेतू परिस्थितियों घटनाओं तथा अन्य व्यक्तियों से अनेक प्रकार से समायोजन स्थापित करता है।

समस्या का महत्व एंव आवश्यकताः–
बदलते हुए समाज की बढ़ती आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा प्रक्रिया को सफल बनाने के लिए उचित समायोजन के लिए निरन्तर शोध की आवश्यकता है समाज व शिक्षा जगत में व समायोजन के क्षेत्र में अनुसन्धान की आवश्यकता को निम्न बिन्दुओं से स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। समाज व्याप्त रूढ़िगत विचारों व व्यवहारों का किशोरावस्था पर पारिवारिक दबावों के चलते पड़ रहा है। जिसके परिणामस्वरूप वह परिवार के असमायोजित व्यवहार से कुंठित हो जाते है। उत्तर भारत के अधिकाशं ग्रामीण क्षेत्र के परिवार चाहे कितने भी शिक्षित क्यों न हो, परन्तु वह रूढ़िगत परम्परा के आगे घुटने टेक देते है। समायोजन की प्रक्रिया में शारीरिक स्वास्थ्य के बाद मानसिक स्वास्थ्य के अध्ययन की आवश्यकता पड़ती है क्योंकि यदि मानसिक स्वास्थ्य ठीक नहीं होगा तो उसमें चिन्तन करने की क्षमता क्षीण हो जायेगी और चिन्तन के बिना भावनाओं, स्वाभिमान, उत्परिवर्तन तथा उदासीनता दूर नहीं होगी। अतः उपरोक्त तथ्य को ध्यान में रखकर किशोरों का दृष्टिकोण वैज्ञानिक तथा चिन्तन, वस्तुनिष्ठ बनाया जाये।
किशोरावस्था जीवन का एक ऐसा समय है जिसमें किशोर बालक एंव बालिकायें जोश से ओत–प्रोत होते है उनमें किसी कार्य को करने के लिए भरपूर जिज्ञासा होती है, वह चाहते है कि सब कुछ ऐसा नया कर दिखाये जिससे सबका ध्यान उनकी तरफ आकर्षित रहे। यही पारिवारिक या विघालयी अथवा मनोवैज्ञानिक कारणों के अभाव में उनमें कोई विकार जन्म लें चुका है तो यह पूरे व्यक्तित्व को प्रभावित करेगाा अतः समायोजन के क्षेत्र में शोध की आवश्यकता महसूस हुई।

अध्ययन के उद्देश्यः–
1. किशोर बालक व बालिकाओं के समायोजन का अध्ययन करना।
2. किशोरावस्था में निवास क्षेत्र (ग्रामीण व शहरी) का समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना:–

1. किशोर बालक व बालिकाओं के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के किशोर बालकों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नही है।
3. ग्रामीण व शहरी क्षेत्र की किशोर बालिकाओं के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नही है।

शोध विधि :–

प्रस्तुत अध्ययन 'सर्वेक्षण विधि' को आधार मानकर किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन देहरादून जनपद के रायपुर विकासखण्ड क्षेत्र में किया है।

जनसंख्या:–

प्रस्तुत अध्ययन में जनपद देहरादून के विकासखण्ड रायपुर क्षेत्र के माध्यमिक विघालयों में अध्ययनरत किशोर बालक व बालिकाओं पर किया गया है। इसमें विकासखण्ड रायपुर क्षेत्र के 28 शासकीय व 57 अशासकीय विघालयों मे से माध्यमिक कक्षा के किशोर बालक व बालिकाओं को चुना गया है।

न्यादर्श:–

प्रस्तुत अध्ययन हेतु शोघार्थी द्वारा देहरादून जनपद के रायपुर विकासखण्ड के 6 माध्यमिक विघालयों में से कुल 120 छात्र–छात्रओ का चयन ग्रामीण व शहरी क्षेत्र मे से किया गया। जिसमें 60 बालक व 60 बालिकाओं का चयन न्यादर्श के रूप मे किया गया।

शोध उपकरण:–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में किशोर बालक व बालिकाओं के 'समायोजन स्तर' से सम्बन्धित प्रद्धत एकत्र करने हेतु शोधकर्ता द्वारा डॉ॰ आर॰ के॰ ओझा द्वारा निर्मित समायोजन परिसूची का प्रयोग किया गया है। इस परीसूची मे समायोजन के 4 क्षेत्रों का मापन किया जा सकता है।

1. ग्रह समायोजन
2. सामाजिक समायोजन
3. स्वास्थ्य समायोजन
4. संवेगात्मक समायोजन

विश्वसनीयता:–

इस परीसूची के विश्वसनीयता उच्च स्तर की है। इसका विश्वसनीयता गुणांक विभक्तार्द्ध तथा पुर्न परीक्षण विधि द्वारा ज्ञात किया गया है।

विधि	ग्रह	स्वास्थ्य	सामाजिक	संवेगात्मक
विभक्तार्द्ध	0.84	0.81	0.87	0.89
पुर्न परीक्षण	0.91	0.90	0.89	0.92

वैघता:– इस परीसूची का वैघता गुणांक निम्न है।

क्षेत्र	ग्रह	स्वास्थ्य	सामाजिक	संवेगात्मक
वैघता गुणांक	0.72	0.79	0.82	0.81

सांख्यिकीय प्रविधियॉं:–

एकत्रित प्रदतों का विश्लेषण करने के लिए मध्यमान, मानक विचलन तथा टी परीक्षण आदि का प्रयोग किया गया है।

व्याख्या एंव परिणाम:–

तालिका संख्या–01

''किशोर बालक व बालिकाओं के समायोजन का विश्लेषण''

वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक मान	स्वतन्त्राय मात्रा	सार्थकता स्तर	सारणी मूल्य
बालक	60	50.14	11.63	2.63	118	0.05	1.96
बालिकायें	60	58.08	23.34			0.01	2.59

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि किशोर बालकों के समायोजन का मध्यमान तथा मानक विचलन क्रमश :–50.14, 11.63 है। किशोर बालिकाओं के समायोजन के प्राप्तांकों का मध्यमान 58.08 है तथा मानक विचलन 23.5 है। टी मूल्य 2.63 है, 0.05, 0.01 सार्थकता स्तर पर टी का सारणी मूल्य क्रमशः1.96 व 2.59 है जो कि सारणी मूल्य से अधिक है।
अतः यहाँ पर दोनों स्तर पर सार्थक अन्तर है। अर्थात् ली गई परिकल्पना असत्य सिद्ध होती है। अतः किशोरावस्था में लिंग का समायोजन पर प्रभाव पड़ता है।

तालिका संख्या–02
''ग्रामीण बालकों एंव शहरी बालकों के समायोजन का विश्लेषण''

वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक मान	स्वतन्त्राय मात्रा	सार्थकता स्तर	सारणी मूल्य
ग्रामीण बालक	30	66.1	8.44	2.59	58	0.05	1.96
शहरी बालक	30	58.16	15.46			0.01	2.59

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण बालकों व शहरी बालकों के समायोजन के प्राप्तांको का मध्यमान क्रमशः 66.1 व 58.16 है तथा मानक विचलन 8.44,15.46 है। टी मूल्य 2.59 है। जो कि सारणी मूल्य से अधिक है।
अतः यहाँ पर दोनों स्तर पर सार्थक अन्तर है। अर्थात् ली गई परिकल्पना आशिंक रूप से असत्य सिद्ध होती है। अतः किशोरावस्था में क्षेत्र का समायोजन पर प्रभाव पड़ता है।

तालिका संख्या–03
''ग्रामीण बालिकाओं एंव शहरी बालिकाओं के समायोजन का विश्लेषण''

वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक मान	स्वतन्त्राय मात्रा	सार्थकता स्तर	सारणी मूल्य
ग्रामीण बालिकायें	30	65.1	8.89	2.95	58	0.05	1.96
शहरी बालिकायें	30	55.24	16.19			0.01	2.59

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि ग्रामीण व शहरी बालिकाओं के समायोजन के प्राप्तांको का मध्यमान क्रमशः 65.2, 55.24 व मानक विचलन 8.89, 16.19 है। सारणी मूल्य 0.05 तथा 0.01 सार्थकता स्तर टी का सारणी मूल्य क्रमशः1.96 तथा 2.59 है जो कि दोनों स्तर पर प्राप्त टी मूल्य से अधिक है।
अतः ग्रामीण व शहरी बालिकाओं के समायोजन में सार्थक अन्तर है। अतः ली गई परिकल्पना असत्य सिद्ध होती है। अतः किशोरावस्था में क्षेत्र का समायोजन पर प्रभाव पड़ता है।

परिणामों का विश्लेषणः–
1. किशोरों के समायोजन के विश्लेषणात्मक अध्ययन से ज्ञात होता है कि किशोरावस्था में लिंग का समायोजन पर प्रभाव पड़ता है, इसमे बालिकाओ का समायोजन बालको से अधिक पाया गया, जिसका कारण स्पष्ट है कि भारतीय संस्कृति एंव परिवेश में बालकों से अधिक बालिकाओ को समायोजित करने की शिक्षा दी जाती है। अतः बालिकायें, बालको से अधिक समायोजन करने वाली होती है। यह परिणाम निश्चित तौर पर समाज की अवाश्यकता को भी दर्शाता है।

तालिका न०. 01
2. किशोरों के क्षेत्रानुसार समायोजन का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि किशोरावस्था में क्षेत्र का समायोजन पर प्रभाव पड़ता है। अतः हमनें देखा कि क्षेत्र के वातावरण पर प्रभाव पड़ता है। ग्रामीण समाज में बालकों का समाजिकरण शहरी समाज की अपेक्षा से अधिक होता है। अतः उनका समायोजन भी शहरी क्षेत्र के बालकों से अधिक होता है। वर्तमान में शहरी क्षेत्र में एकाकी बालक की कल्पना स्थिति स्वंय से समायोजन का अभाव उत्पन्न कर रही है। जबकी ग्रामीण क्षेत्र में सयुक्त परिवारों की प्रधानता होने से बालक स्वंय हर परिस्थिति में समायोजन करना सीख जाते है।

ग्रामीण व शहरी बालकों एंव बालिकाओ दोनों के समायोजन का अध्ययन करने पर परिणाम इसी विचार को परिपुष्ट कर रहे है।

तालिका न०. **–02 व 03**

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1. जायसवाल डॉ॰ सीताराम, बाल मनोविज्ञान (आर्य बुक डिपो) नई दिल्ली।
2. भटनागर सुरेश, शिक्षा मनोविज्ञान, (आर॰ लाल॰ बुक डिपो, मेरठ) 1982, पेज न॰. 54–59
3. चौबे सरयू प्रसाद, किशोर मनोविज्ञान के मूलतत्व, कॉनसैप्ट प्रकाशन कम्पनी नई दिल्ली–2004, पेज न॰. 49–208
4. गैरिट हेनरी ई॰ शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग (कल्याणी पब्लिशर्स, लुधियाना),1972 पेज न॰. 52–72
5. कुलश्रेष्ठ डॉ॰ एस॰ पी॰, शिक्षा मनोविज्ञान (आर॰ लाल॰ बुक डिपो, मेरठ)
6. डा॰ कौल, लोकेश.(2007), शैक्षिक अनुसन्धान की कार्यप्रणाली
7. मिश्र पी॰ डी॰ व मिश्र बीना 'असामान्य व्यवहार' (उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ)
8. माथुर, डॉ॰ एस॰ एस॰ (2007), शिक्षा मनोविज्ञान (आर॰ लाल॰ बुक डिपो, मेरठ)
9. नेगी विरेन्द्र सिंह, एम॰ एड॰ लघु शोध (1999), डी.ए.वी (पी॰जी॰) कालेज, देहरादून।
10. रावत कुंवर सिंह, एम॰ एड॰ लघु शोध (1986), स्वामी रामतीर्थ संद्धटक महाविघालय, नई टिहरी (गढ़वाल)।
11 Human Development, Vol.35.P.N.1-6 (1992) N.I.V.H.
12 Fourth Educational Survey (Vol.-1), M.B.Buch
13- Fifth Educational Survey (Vol.-1), NCERT